Viswanatha Satyanarayana, Tarigonda Vengamamba & Aatukuri (Kummari) Molla

Viswanatha Satyanarayana (10 September 1895 - 18 October 1976): Sri Viswanatha Satyanarayana, acclaimed by the learned as Kavi Samrat (Emperor of Poets) is a legend in the Telugu States. He was born in a traditional family to father Sobhanadri and mother Parvathi on 10 September 1895 in a small village, Nandamuru in Krishna District, Andhra Pradesh. He was highly learned in classics like the Mahabharahta, Bhagavatha and Ramayana Sanskrit and Telugu and had masterly grasp of the works of Kalidasa, Bhavabhooti, Bharavi, Bhartruhari. He had mastery over Sanskrit, Telugu and English all of which he taught in several colleges during his career as a lecturer. He wrote profusely: 30 Kavays; 20 plays; 60 novels; 10 literary criticisms; 200 khanda kavyas ; 35 short stories ; 70 essays; 50 radio plays ; 3 play- lets; 10 essays in English ; 10 works in Sanskrit; 3 translations; 100 introductions and forewords as well as radio talks ; some of his poems and novels have been translated into English, Hindi, Tamil, Malayalam, Urdu and Sanskrit.

His most celebrated works are Srimad Ramayana Kalpavruksham and Veyi Padagalu translated from Telugu into Hindi by the former Prime Minister Sri P V Narasimha Rao as Sahasra Phani. Plays among which the most famous are: Nartanasala, Shivaji - Roshanara (a historic play); Vena Raju, literary criticisms like Shakunalamu Yokka Abhignanatha; Sitayascharitam Mahat; Sahitya Surabham etc.

Tarigonda Vengamamba (20 April 1730 - 21 Aug 1817): Vengamamba was born in the village Tarigonda over 100 kms from the famous temple town Tirumala in the Chittoor district of Andhra Pradesh on the 20th April 1730. From her childhood she used to visit the Narasimhaswamy temple in the village. From her mother she learned many hymns and devotional songs, the rendering of which she spent most of her time.

She was married at age eight. When she was to join her husband, she told him that she considered Lord Balaji (Venkateswara) as her husband and no one else. A few days afterwards that man died. She refused to consider herself as a widow and continued to dress as a married woman.

Instructed by Acharya Subrahmanyudu she became a Yogini. She moved to Tirumala where she was welcomed by the priests and descendants of another great bhakta, Annamayya. Her reputation as a Yogini preceded her arrival in Tirumala Tirupati.

Vengamamba did not go to any school; neither was she taught by any teacher. She became a great poetess. She composed a variety of devotional literature such as Vishnu Parijatham, Chenchu Natakam, Rukmini Natakam, Jala Krida Vilasam and Mukthi Kanthi Vilasam (all Yaksha Ganams), Gopi Natakam (Golla Kalapam-Yakshaganam), Rama Parinayam, Sri Bhagavatham, Sri Krishna Manjari, Tatva Keerthanalu and Vashista Ramayanam (Dwipada), Sri Venkataachala Mahatyam (Padya Prabhandam) and Ashtanga Yoga,Saram (Padyakruthi). Her literary works of many varieties were inscribed on thousands of palm-leaves. Vengamamba gave up her mortal remains in a Deeksha on 21 Aug 1817.

Aatukuri (Kummari) Molla (1440 - 1530): Poetess Aatukuri Molla (Molla means Jasmine in Telugu) was born (13-03-1440) in village Gopavaram, Kaluvayi Mandalam of Nellore district in Andhra Pradesh.

For generations, Molla's ancestors were Siva Bhaktas, devotees of Siva, (also known as Mallanna, in the Telugu lands). Molla was not schooled and tutored in the traditional way. Her literary talent is described as Sahaja Panditya, a gift from Srikantha Malleswara Swamy. Although from a family of traditional Siva bhaktas, Molla revered Sri Rama, one of Vishnu's avataras (incarnation) in an equal measure.

Molla's Ramayana in Telugu is very popular among the masses because, it is in simple and beautiful language. Molla's Ramayana contains a little over 870 poems and prose. She expanded those events in Rama's life which concern ordinary people in their daily life, in their trials and tribulations; in their triumphs and failures; in their pleasures and pains. Molla was the first woman poet who wrote a Ramayana in Telugu. Molla's literary merit was held by the scholars of that time as precious and as meritorious as that of the most learned and accomplished and decorated poets. A statue was raised for her in Kadapa town in A.P. There is a temple, dedicated to Molla in Guntur town of Andhra Pradesh. A movie was produced about her and her Ramayana. She passed away in 1530.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamps on Viswanatha Satyanarayana, Tarigonda Vengamamba & Aatukuri (Kummari) Molla.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent

Stamp / First Day Cover/ Brochure/Cancellation Cachet : Shri Brahm Prakash

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



विवरणिका
BROCHURE

विश्वनाथ सत्यनारायण, तारिगोंडा वेंगमांबा एवं आतुकुरि (कुमारी) मोल्ला

विश्वनाथ सत्यनारायण (10 सितम्बर,1895 - 18 अक्तूबर,1976) - विद्वतजन द्वारा कवि सम्राट की उपाधि से विभूषित श्री विश्वनाथ सत्यनारायण, तेलुगू राज्यों में अत्यंत प्रख्यात हैं। उनका जन्म आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में नंदामुरू नामक छोटे से गांव में 10 सितम्बर, 1895 को एक पारंपरिक परिवार में हुआ था। उनके पिता सोभानादरी और माता पार्वती थीं। श्री सत्यनारायण, महाभारत, भागवत तथा संस्कृत व तेलुगू रामायण जैसे शास्त्रीय ग्रंथों के विशेष ज्ञाता थे। साथ ही उन्हें कालिदास, भवभूति, भारवी और भर्तृहरि की रचनाओं का भी विशिष्ट ज्ञान था। उन्हें संस्कृत, तेलुगू और अंग्रेजी भाषा में महारत हासिल थी और व्याख्याता रहते हुए उन्होंने विभिन्न कॉलेजों में इन भाषाओं में अध्यापन कार्य भी किया। इसके अतिरिक्त, श्री सत्यनारायण ने विपुल लेखन कार्य किया, जिसमें 30 काव्य रचनाएं, 20 नाटक, 60 उपन्यास, 10 साहित्यिक आलोचनाएं, 200 खंड काव्य, 35 लघु कथाएं, 70 निबंध, 50 रेडियो नाटक, 3 लघु नाटक, अंग्रेजी में लिखे 10 निबंध, संस्कृत की 10 रचनाएं, 3 अनूदित रचनाएं, 100 प्रस्तावना तथा प्राक्कथन और रेडियो वार्ताएं शामिल हैं। उनकी रची कुछ कविताओं और उपन्यासों का अनुवाद अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल, मलयालम, उर्दू और संस्कृत में भी हुआ है।

उनकी सबसे प्रख्यात रचनाओं में श्रीमद् रामायण कल्पवृक्षम और वेयी पडगलू शामिल हैं, जिनका अनुवाद पूर्व प्रधानमंत्री, श्री पी.वी. नरसिम्हा राव द्वारा तेलुगू से हिन्दी में सहस्रफणी के नाम से किया गया। उनकी सबसे प्रसिद्ध नाट्य रचनाओं में नर्तनशाला, शिवाजी-रोशनआरा (ऐतिहासिक नाटक), वेणा राजू और शकुनालामू योक्का अभिज्ञानाथ जैसी साहित्यिक आलोचनाएं, सीतायशचरितम् महत, साहित्य सुरभम आदि शामिल हैं।

तारिगोंडा वेंगमांबा (20 अप्रैल, 1730 - 21 अगस्त, 1817) - वेंगमांबा का जन्म, आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के प्रसिद्ध शहर तिरुमला से लगभग 100 कि.मी. दूर तारिगोंडा नामक गांव में 20 अप्रैल, 1730 को हुआ था। बचपन से ही वे अपने गांव के नरसिंहस्वामी मंदिर में नियमित रूप से जाती थीं। अपनी माता से उन्होंने अनेक स्तोत्र और भक्ति गीत सीखे। यही भक्ति गीत आदि गाकर वह अपना अधिकतर समय व्यतीत करती थीं।

आठ वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया। अपने पति के संग जाते समय उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वे भगवान बालाजी (वेंकटेश्वर) को ही अपना पति-परमेश्वर मानती हैं, किसी ओर को नहीं। इसके कुछ ही दिनों बाद उनके पति का देहांत हो गया। परन्तु वेंगमांबा ने स्वयं को विधवा मानने से इंकार कर दिया और वे विवाहित महिलाओं जैसी पोशाकें आदि ही पहनती रहीं।

आचार्य सुब्रहम्ण्युडु की आज्ञा पर वे योगिनी बन गईं। इसके बाद वे तिरुमला चली गईं। यहां अन्य पुजारियों तथा एक अन्य महान भक्त अण्णामया के अनुयायियों ने उनका विधिवत स्वागत किया। तिरुमला, तिरुपति पहुंचने से पहले ही योगिनी के रूप में वेंगमांबा की प्रतिष्ठा की चर्चाएं यहां होने लगी थी।

वेंगमांबा कभी स्कूल नहीं गई और न ही किसी शिक्षक ने उन्हें शिक्षा प्रदान की। परन्तु, इसके बावजूद वे महान कवयित्री बनीं और उन्होंने विविध प्रकार के भक्ति साहित्य की रचना की, जिसमें विष्णु परिजातम्, चेंचू नाटकम्, रुक्मिणी नाटकम्, जल क्रीड़ा विलासम् और मुक्ति कांति विलासम् (सभी यक्षगणम्), गोपी नाटकम् (मोल्ला कलापम्-यक्षगणम्), राम परिणयम्, श्री भगवतम्, श्री कृष्ण मंजरी, तत्व कीर्तनलू तथा वशिष्ठ रामायणम् (द्विपद), श्री वेंकटचला महात्यम् (पद्य प्रभंदम) और अष्टांग योग, सारम् (पद्यकृति) शामिल हैं। उनकी विविध साहित्यिक रचनाओं को हजारों ताड़-पत्रों पर उत्कीर्ण किया गया है। वेगमांबा ने 21 अगस्त, 1817 को दीक्षा प्राप्त कर अपने भौतिक शरीर को त्याग दिया।

आतुकुरि कुमारी मोल्ला (1440-1530) - कवयित्री आतुकुरि मोल्ला (तेलुगू में मोल्ला का अर्थ चमेली है) का जन्म आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले के कलुवईमंडलम स्थित गोपुरम नामक गांव में 13 मार्च, 1440 को हुआ था।

शताब्दियों से मोल्ला के पूर्वज शिव-भक्त (जिन्हें तेलुगू प्रदेशों में मलाना भी कहा जाता है) थे। मोल्ला ने पारंपरिक तौर-तरीकों से शिक्षा ग्रहण नहीं की। उनकी साहित्यिक मेधा को सहज पांडित्य के रूप में व्याख्यायित किया गया है। माना गया कि उनकी यह अद्भुत मेधा, श्रीकांत मल्लेश्वर स्वामी का वरदान स्वरूप थी। मोल्ला का संबंध पारंपरिक शिव-भक्तों के परिवार से था, परंतु वे स्वयं भगवान श्री राम की भक्त थीं, जिन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है।

मोल्ला द्वारा तेलुगू में रचित रामायण अपनी सरल और सुंदर भाषा के कारण जनसामान्य में अत्यंत लोकप्रिय है। मोल ला की इस रामायण में लगभग 870 कविताएं और गद्यांश हैं। अपनी इस रचना में मोल्ला ने भगवान राम के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं की विस्तार से व्याख्या की है, जिनका संबंध आमजन के जीवन के उतार-चढ़ाव से रहता है। ये वे घटनाएं हैं, जिन्हें साधारण मनुष्य अपने दैनिक जीवन की जीत-हार और अपने दुख-सुख से जोड़कर देख सकता है। मोल्ला पहली कवयित्री थीं, जिन्होंने रामायण को तेलुगू में लिखा। मोल्ला की साहित्यिक प्रतिभा को समकालीन विद्वानों ने अनमोल माना और उन्हें उस दौर के प्रकांड विद्वानों और अलंकृत कवियों के समतुल्य रखा गया। आंध्र प्रदेश के कडया गांव में उनके सम्मान में उनकी एक मूर्ति स्थापित की गई। आंध्र प्रदेश के गुंटूर कस्बे में मोल्ला को समर्पित एक मंदिर भी स्थापित किया गया है। उनके जीवन और उनकी महान रचना रामायण पर आधारित एक फिल्म भी बनाई गई। 1530 में मोल्ला का निधन हो गया।

डाक विभाग, विश्वनाथ सत्यनारायण, तारिगोंडा वेंगमांबा एवं आतुकुरि (कुमारी) मोल्ला पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण	:	श्री ब्रह्म प्रकाश

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसा, 500 पैसा, 500 पैसा 500 p, 500 p, 500 p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: :	301590 प्रत्येक 301590 each
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The above philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00